समुद्री डाकू और घंटा

लेखक : एलेनोर

समुद्री डाकू और घंटा

खतरा

कैलिफ़ोर्निया के समुद्री तट के
पास समुद्री डाकू देखे गए थे.
वहीँ पास में एक मिशन था.
सैन जुआन कपिस्ट्रॉनों के पादरी
और वहां के स्थानीय इंडियंस
इस खबर से परेशान थे.
"क्या वो हमारे मिशन
पर भी हमला करेंगे?”
पीओ ने अपने पिताजी से पूछा.
"अगर वो शैतान यहाँ आए,"
पीओ के पिताजी ने कहा,
"तब मैं अपने हथोड़े से
उनकी पिटाई करूंगा!"

"अगर समुद्री चोर यहाँ आए,"
पीओ की माँ ने कहा,
"फिर हम पहाड़ियों पर नानी
के घर रहने चले जायेंगे."
"पर मैं यहीं रहूंगा," पीओ ने कहा,
"और समुद्री डाकुओं के साथ
अपने तीर-कमान से लड़ूंगा."
"बेटा, उसके लिए
अभी तुम बहुत छोटे हो,"
माँ ने कहा.
फिर पीओ उठकर खड़ा हुआ.
"अब मैं खरगोशों का
शिकार कर सकता हूँ,"
उसने गर्व से कहा.
पर माँ ने उसे
तिरछी नज़र से देखा.

"चलो, जल्दी से जाओ," माँ ने कहा.
"नहीं तो स्कूल पहुँचने में तुम्हें देर हो जाएगी."

पीओ शहर के चौक तक गया.
पिताजी को कुर्सियां बनाते देखना
खाल से चमड़ा बनते देखना
मोमबत्ती और साबुन बनते देखना
उसे बहुत अच्छा लगता था.

उसे अच्छा लगता था
कुम्हार का चाक
मिट्टी के बर्तन
मोची की बनाई जूतियां
महिलाओं को बुनाई करते
और दोनों पहरेदारों
को बंदूकें पोलिश करते देखना.

पीओ को सबसे पसंद थीं

चर्च की घंटियां.

चर्च की घंटियां लोगों को सुबह

उठने का समय बताती थीं,

उन्हें प्रार्थना, भोजन, काम

और सोने का समय बताती थीं.

उन घंटियों की बात ही

कुछ जादुई थी.

घंटियों के नाम

संतों के नाम पर रखे थे.

सैन विसन्ते उनमें सबसे बड़ी घंटी थी.

उसका आकार राजा के ताज़ जैसा था.

उसकी सबसे मधुर आवाज़ थी.

"हेलो, सैन विसन्ते,"

पीओ फुसफुसाया.

"मेरे लिए तुम

सबसे विशेष घंटी हो."

उसी समय बूढ़ा कारलोस

घंटी बजाने के लिए

बगीचे में आया था.

"शायद एक दिन तुम ***सैन विसन्ते***

को बजाओगे," बूढ़े कार्लोस ने प्यार से कहा.

"आओ, मैं तुम्हें उसे बजाना सिखाता हूँ.

अगर तुम रस्सी को सही तरह से खींचोगे,

तभी घंटी में से गहरी और

सच्ची आवाज़ बाहर निकलेगी.

नहीं तो उसमें से गाय के गले में बंधी

घंटी जैसी आवाज़ आएगी."

जब पीओ ने रस्सी पकड़ी तो

उसे बहुत अच्छा लगा.

"यह क्या चल रहा है?"

किसी ने कड़ी आवाज़ में कहा.

पादरी बरोना ने पीओ के हाथ से रस्सी ले ली.

"देखो तुम्हें स्कूल के लिए देरी हो रही है,"
उन्होंने कहा.
"मुझे माफ़ करें, पादरी," पीओ ने कहा.
"क्योंकि समुद्री डाकुओं के आने का अंदेशा है
इसलिए मैं ***सैन विसन्ते घंटी*** को
बजाना सीख रहा हूँ."
पादरी बरोना ने पीओ को घूर कर देखा.
"इस घंटी को बजाना बड़े सम्मान की बात है,
घंटी बजाने के लिए तुम्हें
कुछ अच्छा काम करना पड़ेगा."
पीओ एक क्षण के लिए सोचता रहा.
"मैं उसके लिए क्या कर सकता हूँ?"
पीओ ने पूछा.
पादरी बरोना मुस्कुराये.
"सबसे पहले तो तुम स्कूल
में समय पर पहुंचना सीखो."

पीओ मुश्किल में फंसा

क्लास में बाकी लड़के

पहले ही अपनी जगह पर बैठे थे.

पीओ चुपचाप

पीछे वाली बेंच पर जाकर बैठा.

पाठ कुछ कठिन था,

इसलिए जब गाने का

पीरियड आया तो पीओ खुश हुआ.

लड़कों ने ढोलक और ड्रम बजाए

उन्होंने गिटार और बांसुरी बजाई.

पीओ ने सूखी लौकी

का झुनझुना बजाया.

आज वो समुद्री डाकुओं और घंटियों

के बारे में ही सोच रहा था.

इसलिए वो गीत के बोल भूल गया था.

"तुम्हारे गीत का न तो सिर है

न ही कोई पैर,"

संगीत सीखने वाले पादरी ने कहा.

"तुम दुबारा कोशिश करो!"

कुछ देर बाद उन्हें ***सैन अंटोनिओ***

घंटी की आवाज़ सुनाई दी.

टन्न! टन्न! टन्न!

अब दोपहर के खाने का समय हो गया था.

"पीओ," टीचर ने कहा,

"क्योंकि तुम आज लेट आये,

इसलिए आज तुम ही सफाई करो."

जब तक पीओ ने सफाई ख़त्म की

तब तक खाना ख़त्म हो चुका था.

इसलिए पीओ भूखा था.

जब वो चौक की ओर दौड़कर गया

तब वो दरवाज़ा बंद करना भूल गया.

वो घर में माता-पिता के पास बैठा.

सबने पहले प्रार्थना की.

फिर उन्होंने खाना खाया.

"वाह! दाल और सब्ज़ी का सूप

बहुत ही स्वादिष्ट था."

पीओ की माँ ने खाना बनाया था.

पीओ ने भी एक टोर्टीआ (रोटी)

और सब्ज़ी खाई.

अचानक पीओ को याद आया -
वो स्कूल में अपनी कक्षा का
दरवाज़ा बंद करना भूल गया था.
फिर वो तेज़ी से दौड़ता हुआ स्कूल गया.
पर तब तक देर हो चुकी थी!

मुर्गियां क्लास में घुस गयीं थीं.
उन्होंने स्याही की दवातें उलट दी थीं.
सब जगह नीली स्याही फ़ैली थी.
हमेशा, कुछ-न-कुछ गड़बड़ हो रहा था.
शायद पीओ को कभी भी घंटी
बजाने का मौका नहीं मिलेगा!

तभी
टन्न! टन्न! टन्न!
करके ***सैन अंटोनिओ*** घंटी बजी.
अब दोपहर के काम करने का समय था.
पीओ बाहर भेड़ चराने गया.

समुद्री डाकू

पीओ, पहाड़ी पर चढ़ा.

वो बीच-बीच में

समुद्र की ओर घूरता रहा.

क्या वहां समुद्री चोरों का कोई जहाज़ था?

तभी अचानक पीओ को घोड़े पर सवार

एक आदमी खेतों में तेज़ी से दौड़ता दिखा.

वो आदमी कुछ चिल्ला रहा था.

पास आने पर पीओ ने सुना

"समुद्री डाकू आ रहे हैं!"

फिर पीओ भेड़ों के बारे में सब भूल गया.

तेज़ दौड़ने के लिए उसने

अपने तलुओं को सूखी मिट्टी से रगड़ा.

फिर वो तेज़ी से दौड़ा.

सैन विसन्ते की घंटी

बहुत ज़ोर से बज रही थी.

टन्न! टन्न! टन्न!

जल्दी से सब लोग चर्च में आओ!

"समुद्री डाकुओं का जहाज़ अभी दो दिन दूर है!"

घुड़सवार ने पूरी भीड़ को बताया.

यह सुनकर पीओ सहम गया.

तो सच में समुद्री डाकू आ रहे थे!

"चलो मिलकर प्रार्थना करें
कि सैनिक जल्दी आएं,"
पादरी बरोना ने कहा.
"पर अगर समुद्री डाकू पहले आ गए,
फिर हम क्या करेंगे?"
पीओ की माँ ने पूछा.
"डरने की कोई बात नहीं,"
पादरी बरोना ने कहा.
"कल हम पहाड़ी पर एक
सुरक्षित स्थान पर चले जायेंगे."

"आज रात हम खाना पैक करेंगे,
और अपनी महंगी चीज़ें छिपा देंगे.
फिर समुद्री डाकुओं को लूटने के
लिए यहाँ कुछ भी नहीं मिलेगा."
"यह तो समुद्री डाकुओं के साथ
एक अच्छा मज़ाक होगा!"
पीओ ने कहा.
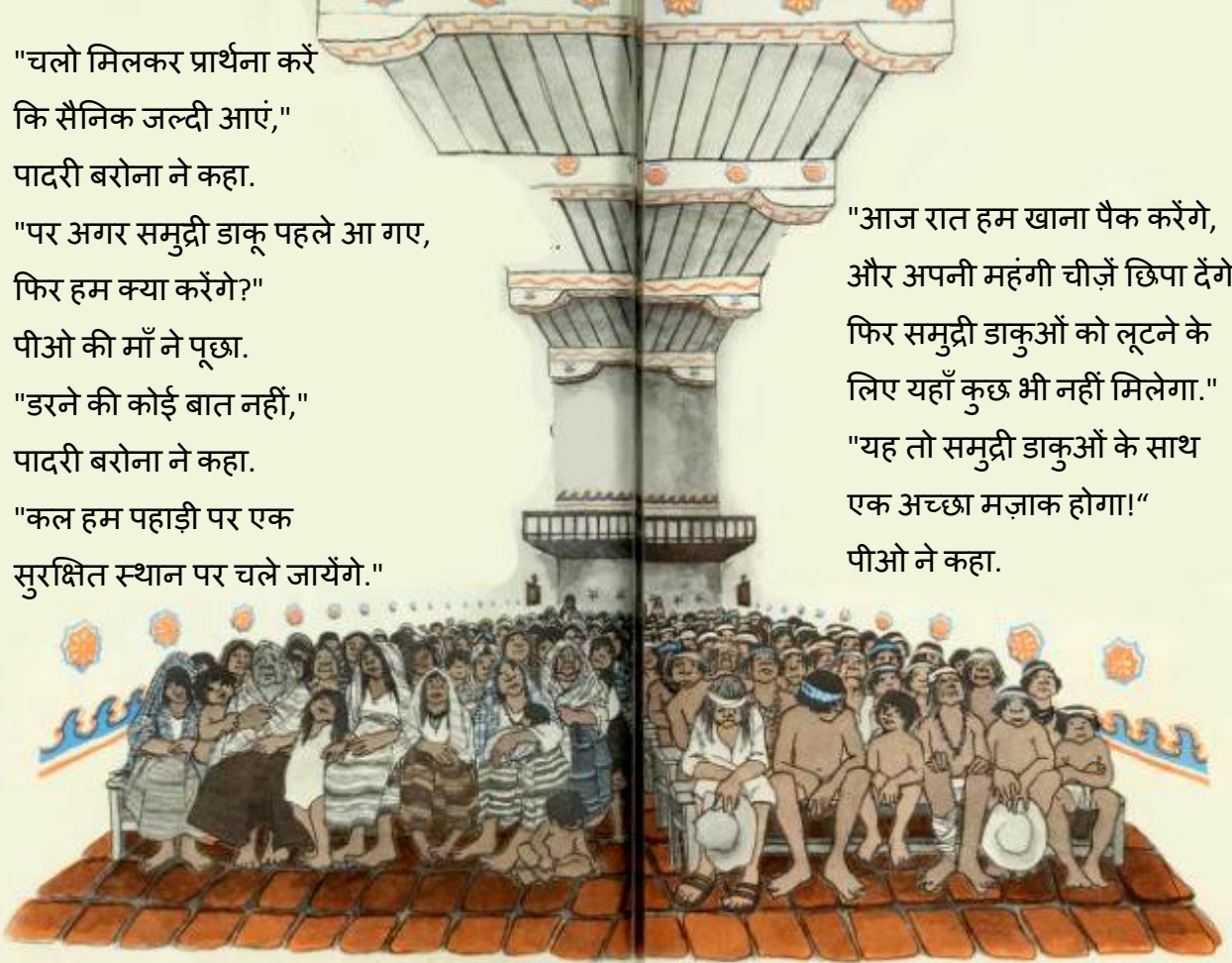
रात के भोजन के बाद
चौक के बीच में
आग जलाई गई.
फिर औरतों-मर्दों, लड़के-लड़कियों ने
मिलकर पुराने गीत गाए.
उसके बाद उन्होंने खालें, मोमबत्तियां, साबुन,
ऊन, कम्बल, जूते और खाना आदि पैक किया.

पादरी बरोना ने सावधानी से
चांदी के मोमबत्ती स्टैंड को
और देवी की मूर्ती को
कपड़े में लपेटा.
पादरी ने उन्हें बगीचे
के कोने में मिट्टी में गाढ़ दिया.

बूढ़े कार्लोस ने

अब सोने के लिए घंटी बजाई.

पीओ के माँ-बाप मिशन के बाहर

अपने घर में वापिस गए.

पीओ, मिशन के अंदर ही

अन्य लड़कों के साथ रहा.

पर उसे अच्छी नींद नहीं आई.

उसे समुद्री डाकुओं के सपने आ रहे थे.

वे लम्बी तलवारों से उसका पीछा कर रहे थे.

उसे ख़ुशी हुई जब सुबह ***सैन विसन्ते*** की घंटी

ने उसे जगाया.

टन्न! टन्न! टन्न!

गुड-मॉर्निंग! घंटी ने कहा.

चलो, अब सुबह की प्रार्थना का समय है.

पीओ गायब हुआ
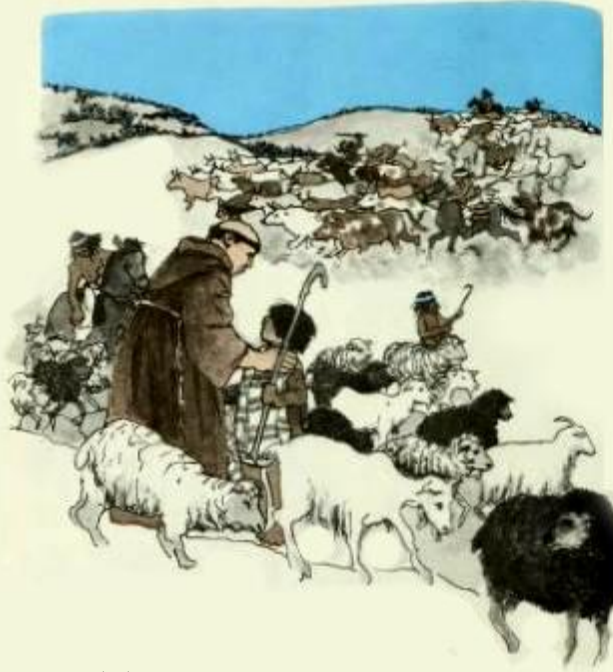
नाश्ते के बाद
पीओ ने सब जानवरों को इकट्ठा किया.

वो उन्हें हांकता हुआ पहाड़ी पर ले गया.
लोग इधर-उधर काम कर रहे थे,
कुछ अपने बैलों को लाद रहे थे.
"हम अपने साथ सब
खाना नहीं ले जा पाएंगे,"
पादरी बरोना ने कहा.
"बाकी भोजन ले जाने के लिए
हम कल वापिस आएंगे."
पीओ, पादरी बरोना के साथ-साथ चला.
"अगर आज रात को समुद्री डाकू आए
तो फिर ***सैन विसन्ते घंटी*** को
कौन बजायेगा?"
पादरी ने पीओ का कन्धा थपथपाया.
"वे इतनी जल्दी नहीं आएंगे,"
उन्होंने कहा.

पीओ को पादरी की बात ठीक नहीं लगी.
उसे रात का सपना
बिल्कुल सच लग रहा था.
जल्द ही पादरियों और स्थानीय लोगों,
बैलों और जानवरों की लम्बी लाइन,
पहाड़ी पर चढ़ रही थी.

"पीओ कहाँ है?" माँ ने पूछा.
"वो शायद अपने दोस्तों के साथ होगा,"
पीओ ने पिता ने उत्तर दिया.

पर असल में पीओ वहां नहीं था.
माँ-बाप ने उसे सब जगह खोजा.
किसी ने भी पीओ को नहीं देखा था.
पीओ पत्थर के पुराने चर्च के खंडहर
में छिपा बैठा था.
वो यह भूल गया था कि उसके माँ-बाप
उसके लिए बेहद परेशान होंगे.
इस समय वो सिर्फ समुद्री डाकुओं
के बारे में ही सोच रहा था.
अँधेरा होने पर
पीओ चौक में गया.

वहां पर सैनिक मार्च कर रहे थे.
पीओ उन्हें देखकर मुस्कुराया.
उसने कुल मिलकर
तीस सैनिकों को गिना.
उनके साथ दो पहरेदार भी थे.
कुल मिलकर बत्तीस हुए.
"इतने लोग समुद्री डाकुओं को
डराने के लिए काफी होंगे,"
उसने सोचा.

पीओ ने कुछ सेब लिए
और अपने तीर-कमान के साथ
समुद्र के तट की ओर दौड़ा.
वो सबसे पहले समुद्री डाकुओं
का जहाज़ देखना चाहता था.

धीरे-धीरे अँधेरा छाने लगा
और आसमान में चाँद चमकने लगा.
पीओ तारों की छतरी के नीचे
गाने गुनगुनाने लगा.
उसे जितने भी गाने आते थे
उसने वे सभी गीत गाये,
पर फिर भी वो जगा नहीं रह सका.

सुबह चिड़ियों की चहचहाहट से
उसकी आँख खुली.
उसने समुद्र में घूरा.
उसने अपनी आँखें मलीं,
फिर दुबारा घूरा.

समुद्री डाकुओं का जहाज़ सामने खड़ा था!
डाकू छोटी नावों में किनारे आ रहे थे.
पीओ, यह खबर सैनिकों को
बताने के लिए दौड़ा.

"समुद्री डाकू आ गए हैं!"
वो चिल्लाया.
सैनिकों का अफसर
पुष्टि करने के लिए
घोड़े पर दौड़ा.

अफसर ने हामी भरी.
"देखो, सौ से ज़्यादा समुद्री डाकू हैं,"
उसने कहा.
"तुम भी पहाड़ी पर जाकर छिप जाओ.
हम यहाँ से पीछे हटेंगे, नहीं तो मारे जायेंगे."

वापिस आकर उसने कहा,
"हमें यहाँ से पीछे हटना चाहिए."
पीओ को यह ठीक नहीं लगा.
"आप लोग यहाँ से भाग रहे हैं?" उसने पूछा.

पीओ ने घंटा बजाया!

फिर पीओ दौड़ा,

उसे घंटियां याद आईं.

वो लोगों को आगाह करेगा.

वो चर्च के बगीचे में दौड़ा हुआ गया.

उसने अपना पूरा दम लगाकर

सैन विसन्ते वाला घंटा बजाया.

टन्न! टन्न! टन्न!

सभी पहाड़ियों पर लोगों को

घंटे की आवाज़ सुनाई दी.

"वो घंटा पीओ ने बजाया होगा,"

बूढ़े कार्लोस ने कहा.

"हमारे मिशन को खतरा है,"

कहकर पीओ की माँ रोने लगीं.

"मेरा बेचारा बेटा!" उन्होंने

सुबकते हुए कहा.

घंटा बजाने के बाद
पीओ सबसे पास की पहाड़ी पर चढ़ा.
उसने कई समुद्री डाकुओं को
मिशन में घुसते हुए देखा.

पर उसने अपने पीछे आते
डाकू को नहीं देखा.
उस डाकू ने पीओ को पकड़ा
और फिर वो उसे खींचकर अपने
लीडर के पास ले गया.

"जनरल बूचार्ड," डाकू ने कहा,
"देखिए मैं किसे पकड़कर लाया हूँ!"
"अरे वाह!" जनरल ने कहा.
"तुम हमसे अपने तीर-कमान से लड़ोगे?"
पीओ ने उस बड़े राक्षस को देखा.
वो लाल और काले रंग के कपड़े पहने था!
पीओ के पैर कांपने लगे.
पर उसने बहादुरी से काम किया.
उसने अपना सिर हिलाया.
"उसकी गर्दन काट दो!"
समुद्री डाकू चिल्लाया.

पीओ ने खुद को छुड़ाने की कोशिश की.

जनरल बोचार्ड हंसा.

"उसे जाने दो!" उसने कहा.

पीओ तेज़ी से दौड़ा.

आगे सुरक्षित दूरी पर पहुंचकर

पीओ एक पेड़ पर चढ़ा

फिर उसने पीछे देखा.

"खाना! यहाँ बिल्कुल ताज़ा खाना है!"

सारे समुद्री डाकू चिल्लाये.

फिर कोई गुस्से में चिल्लाया.

"वो सबकुछ अपने साथ ले गए!

चलो, इस जगह को जला देते हैं!"

धुएं का काला बादल
हवा में ऊपर उठा.
पीओ ने रात होने का इंतज़ार किया.
फिर वो वापिस गया.
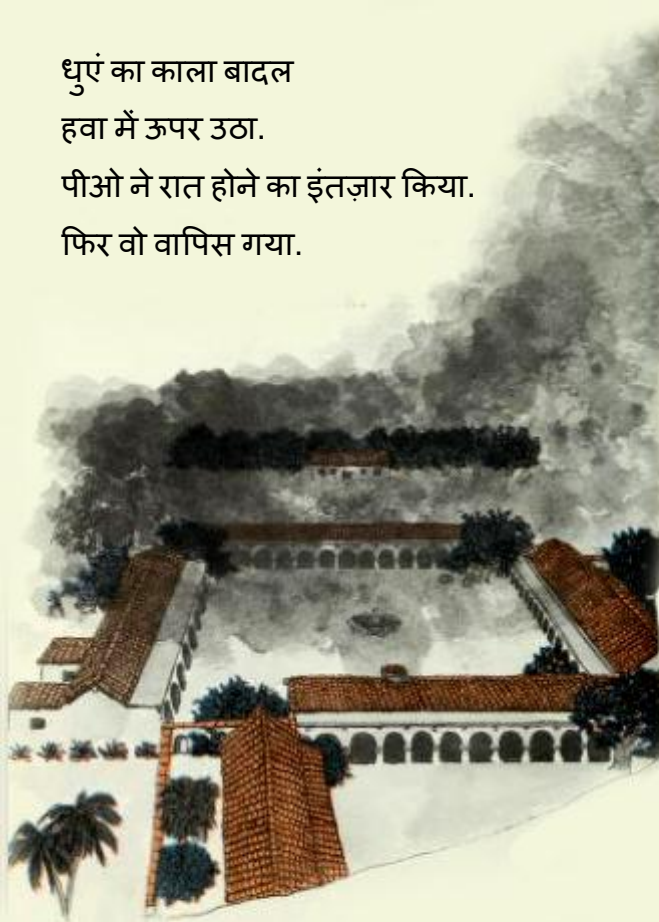
फिर डाकुओं ने कुछ घरों में आग लगाई
पर मिशन सुरक्षित रहा.
तीन दिनों तक पीओ
यह सब देखता रहा.
वो बेर और जड़ें खाकर ज़िंदा रहा.
बीच में वो कुछ देर सोया भी.
अंत में समुद्री डाकू
अपने जहाज़ पर चले गए.

फिर पीओ ने दुबारा

सैन विसन्ते वाले घंटे को बजाया.

टन्न! टन्न! टन्न!

चर्च में वापिस आओ!

पीओ ने बार-बार वही सन्देश

घंटा बजाकर भेजा.

फिर दोपहर को

पादरी और स्थानीय लोग

वापिस अपने घर लौटे.

पीओ अपने माता-पिता को देखकर

बेहद खुश हुआ.

वो सीधा अपनी माँ से

जाकर लिपट गया.

"पीओ!" पिताजी चिल्लाये.

"तुमने हमें डरा दिया."

पर उन्होंने भी पीओ को गले लगाया.

"तुम अब बहादुरी दिखाने लायक,

बड़े हो गए हो,“ माँ ने कहा.

यह सुनकर पीओ की

आँखें चमकने लगीं.

"क्या अब मैं ***सैन विसन्ते*** का घंटा

बजा सकता हूँ?"

पीओ ने बरोना से पूछा.

पादरी मुस्कुराये.

"तुमने वो कमाया है," उन्होंने कहा.

फिर पीओ, दौड़ा-दौड़ा यह खबर

सैन विसन्ते को सुनाने गया.

समाप्त